2331532

कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय HINDI

परीक्षा का दिन TUESDAY

दिनांक 12-03-2024

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	4
2	6	20	4
3	6	21	
4	6	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	4	30	
13	4	31	
14	3	योग	80
15	3	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	4	अंकों में	शब्दों में
17	4	80	अस्सी
18	6		

परीक्षक के हस्ताक्षर [signature] संकेतांक ☐☐☐☐☐

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है।175/2023

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में ''समाप्त'' लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटे।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा ''अनुचित साधनों के प्रयोग'' के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटे।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

*खण्ड - अ

प्र० 1. → वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1	(i)	(ब) इया
1	(ii)	(अ) रमेश
1	(iii)	(ब) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
1	(iv)	(द) अवधी
1	(v)	(अ) उद्धव
1	(vi)	(अ) बिहार
1	(vii)	(अ) चश्मे वाला
1	(viii)	(अ) यशपाल
1	(ix)	(स) रेखाचित्र
1	(x)	(ब) सभ्यता
1	(xi)	(स) इज्जत का
1	(xii)	(ब) देहाती दुनिया

12

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 2. → रिक्त स्थान -

L (i) भाववाचक

L (ii) विशेषण

L (iii) अकर्मक

L (iv) अविकारी

L (v) अंत

L (vi) तीन

6

प्र० 3. → अपठित गद्यांश -

L (i) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक 'राष्ट्र भक्ति / राष्ट्र की सेवा

L (ii) वर्तमान में राष्ट्र को शारीरिक दृष्टि से मज़बूत, निर्भय तथा ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो अपने आप में, अपनी शक्ति में विश्वास करते हो।

L (iii) भारत के राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा को अपना कर गरीबों, भूखों और पीड़ितों की सेवा में अपने को अर्पित करना ही राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा है।

BSER-175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(iv)	विवेकानन्द के उपदेश का ध्येय वाक्य है, "उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए"।
1	(v)	राष्ट्र भक्ति की भावना का आधार विवेक और प्रेम को माना गया है, जिसकी अभिव्यक्ति विवेकपूर्ण कार्य करते हुए बाहरी भेद-भाव को भूलकर हर एक मनुष्य से प्रेम करने में देखी जा सकती है।
1 / 6	(vi)	'आस्तिक' का विपरीतार्थक शब्द – 'नास्तिक'।
		प्र० 4. → अपठित पद्यांश-
1	(i)	प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक है – 'मानव के गुण / मानवों की शक्ति'।
1	(ii)	आदमी के मग में जग का कोई भी विघ्न नहीं टिक सकता है।
1	(iii)	जब मानव ज़ोर लगाता है, तब पत्थर पानी बन जाता है।
1	(iv)	जो बत्ती नहीं जलाता है, वह रोशनी नहीं पाता है अथवा उसे रोशनी नहीं मिलती है।
1	(v)	जब नर / आदमी खम ठोक ठेलता है, तब पर्वत के पाँव उखड़ जाते हैं।

BSER 175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(vi)	मेंहदी के बीच उस प्रकार लाली छिपी है, जिस प्रकार वर्तिका के बीच उजियाली है।
6		

*** खण्ड - ब**

प्र०5. → शहनाई में रीड होती है जो कि अंदर से पोली होती है, जिसमें फूक मारकर शहनाई बजाई जाती है। यह रीड नरकट (एक प्रकार की घाँस) की बनी होती है जो डुमराँव में सोन नदी के किनारे पर मिलती है साथ ही, प्रसिद्ध शहनाई वादक 'बिस्मिल्लाह खाँ' का जन्म स्थान भी डुमराँव ही है।

2

~~प्र०6. →~~

प्र०6. → हालदार साहब ने जब नेताजी की मूर्ति को पहली बार देखा तो उनकी दृष्टि में यह बात खटकती कि कि नेताजी की मूर्ति संगमरमर की थी परंतु चश्मा असली था। नेताजी की मूर्ति पर चौड़े चौखट का चोकोर चश्मा लगा हुआ था। इससे उनके मन में कई प्रश्न उठ खड़े हुए जैसे कि मूर्ति किसने बनाई? क्या संगमरमर का चश्मा टूट गया था या बन ही नहीं पा था? परंतु उन्हें यह विचार बहुत अच्छा लगा और उन्होंने कस्बे वालों के इस प्रयास को सराहनीय माना वे चश्मा लगाने वाले के विषय में भी उत्सुक थे।

2

प्र०7. →

BSER 175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2

प्र० 7 → छोटे बच्चे की मनोहारी दंतुरित मुसकान देखकर कवि का मन प्रफुल्लित हो जाता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है मानो उसकी खाली झोपड़ी में, कमल के फूल खिल गए है। उसकी दंतुरित मुसकान मृतक व्यक्ति में भी जान डाल सकती है। उस बच्चे के स्पर्श से कठोर पाषाण भी द्रवित हो सकता है। उसका स्पर्श पाकर कवि को शेफालिका के फूलों-सी कोमलता महसूस होती है जैसे उसके बाँस व बबूल-से नीरस जीवन में शेफालिका के फूल झड़ने लगे हो। कवि शिशु और माता, दोनों को धन्य मानता है। वह माता के प्रति कृतज्ञता रखता है क्योंकि शिशु की माता ने ही कवि का उससे परिचय करवाया। (चिर प्रवासित)

2

प्र० 8 → "सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला" के द्वारा रची हुई कविता 'उत्साह' बादलों के लिए आह्वान गीत है। कवि बादलों को गरजते हुए पूरे आकाश में छा कर वर्षा करने को कहते हैं। बादलों का गरजना क्रांति, पौरुष व विद्रोह का प्रतीक है। बादलों को कवि ने क्रांतिकारी शक्ति का प्रतीक मानकर एक ओर नव जीवन का संचार करने को कहा है। वहीं दूसरी ओर उन्हें सुखकारी शक्ति के रूप में पीड़ित, शोषित लोगों की प्यास बुझाने व तपती धरती को शीतल करने को कहा है।

प्र० 9. PTO →

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०9.→ गैंगटॉक शहर को देखकर लेखिका के मन में सम्मोहन जगने लगा था। गैंगटॉक 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' है। गैंगटॉक शहर में तारों के गुच्छे रोशनियों की झालर-सी बना रहे थे। इस शहर के दृश्य को देखकर लेखिका ठगी-सी रह गई थी। उसे सब कुछ अर्थहीन-सा लगने लगा व उसके भीतर और बाहर शून्य-सा व्याप्त हो गया। सुबह उठते ही पहले वह बालकनी की तरफ गई क्योंकि वहाँ से हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी 'कंचनजंघा' दिखाई दे सकती थी, परंतु आसमान के बादलों से ढके होने की वजह से उसे कंचनजंघा नहीं दिखाई दी। मैदानी इलाके वालों के लिए गैंगटॉक के दृश्य जन्नत से कम नहीं थे।

2

प्र०10.→ भोलानाथ और उसके साथी चूहे के बिल में पानी डाल रहे थे परंतु अचानक वहाँ से साँप निकल आया जिससे कि वे सब बहुत डर गए और इधर-उधर भागने लगे। कोई औंधा गिरा, कोई अंटाचिट। किसी के दाँत टूटे तो किसी का सिर फूटा। उनके पाँव कांटों से छलनी हो गए। वे सब खून से लहु-लुहान हो गए। भोलानाथ सीधे अपनी माता की गोद में शरण ली और बाबू जी के होने पर माता का आँचल नहीं छोड़ा। भोलानाथ की हालत देखकर उसकी मैया भी रोने लगी।

2

BSEB 175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०11. → • नमक-मिर्च लगाना → बढ़ा-चढ़ाकर बताना।

2

⇒ वाक्य प्रयोग :- मोहल्ले में औरतें कोई बात सुनकर उसपर नमक-मिर्च लगाकर ही (आगे) बताती है।

*खण्ड - स

प्र०12. → आग के आविष्कार ---- बैठ सकता।

1 (i) आग के आविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा रही होगी।

1 (ii) शरीर को सजाने की प्रवृत्ति सुई-धागे के आविष्कार का कारण बनी।

1 (iii) खुले आकाश के नीचे सोया हुआ व्यक्ति रात के जगमगाते तारों को देखता है तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आता क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती-भरा थाल क्या है?

1 (iv) वास्तव में संस्कृत मानव, पेट भरा और तन ढँका होने पर भी, निठल्ला नहीं बैठ सकता।

4

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 13 → ऊधौ, तुम हो .... ताकौं लागी।

L (i) गोपियों ने उद्धव को बड़भागी कहा है।

(ii) गोपियों के उद्धव को बड़भागी कहने में यह तीखा व्यंग्य निहित है कि हे उद्धव! तुम तो बड़े भाग्यशाली हो कि तुम्हें श्री कृष्ण के साथ रहने का अवसर मिला। परंतु वास्तव में तुम अभागे हो क्योंकि तुम श्री कृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम से वंचित रहे। भले ही उद्धव बड़े ज्ञानी व योगी हो परंतु वे प्रेम की पवित्र अनुभूति से वंचित रहे, इसलिए वे गोपियों की दृष्टि में अभागे ही है।

L

(iii) 'पुरइनि पात' से अभिप्राय है— 'कमल के पत्ते'। यहाँ पर गोपियाँ कहती है कि हे उद्धव! तुम तो कमल के पत्ते की तरह हो जो जल के भीतर रहकर भी उससे अप्रभावित रहता है अर्थात् अपने देह पर दाग नहीं लगने देता है। तुम भी संसार में रहते हुए भी सांसारिक बंधनों से मुक्त हो।

L

(iv) तेल की गागरि (गगरी) को जब पानी में डुबोया जाता है तब उसपर जल की एक भी बूँद नहीं ठहरती है।

L

4

प्र० 14: PTO →

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०।4.→ "हालदार साहब ------ उत्तर लिखिए।

उत्तर हालदार साहब एक भावुक व संवेदनशील व्यक्ति है। उनके हृदय में देशभक्तों के प्रति सम्मान व स्नेह का भाव है। वे देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने वाले स्वतंत्रता सेनानी 'नेताजी सुभाषचंद्र बॉस' के प्रति प्रबल आदर-सम्मान का भाव रखते है। नेताजी की मूर्ति पर चश्मा देखना उनके लिए सामान्य बात थी। वह उनकी देशभक्ति की भावना को संतुष्टि प्रदान करती थी। वे कस्बे वालों के प्रयास व चश्मेवाले के चश्मे बदलने के कार्य की सराहना करते थे। परंतु चश्मेवाले की मृत्यु के बाद कुछ दिनों तक मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं था। तो उस बार जब वे कसबे से गुजरे तब उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे चौराहे पर नहीं रुकेंगे और ना ही मूर्ति की ओर देखेंगे। परंतु जब उनकी नजर मूर्ति पर पड़ ही गई तब मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर उन्होंने जीप रुकवा दी और मूर्ति के सामने जाकर अटेंशन (सावधान) में खड़े हो गए। मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा किसी बच्चे ने ही लगाया होगा जो कि यह आशा जगाता है कि देश में अभी भी देशभक्तों का सम्मान करने वाले व देश-भक्ति की भावना बनाए रखने वाले जीवित है। आगामी पीढ़ी देश को आगे बढ़ाएगी। यह सोचकर हालदार साहब की आँखें भर आई।

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० 15 → सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' वर्णन कीजिए।

उत्तर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' रचित कविता 'अट नहीं रही है' में फागुन की मादकता का वर्णन किया गया है। फागुन मास में प्रकृति अपने नवीन व मनोहर रूप में आ जाती है। पेड़ों पर नई-नई डालियाँ लग जाती है, नए फूल व कलियों खिलने लग जाती है। जहाँ दृष्टि जाती है वहाँ प्रकृति अपने सुहावने रूप में व्यापक होती है। पेड़-पौधे, कलियाँ, फूल लालिमा व हरीतिमा फैलाते हुए दिखाई देते है। फागुन की शोभा प्रकृति में समा नहीं रही होती है। पेड़-पौधे, पुष्प आदि झोंकों से वायु को सुगन्धित कर देते हैं जो सुगंध घर-घर में फैल जाती है और मनुष्यों व जीव-जन्तुओं को पुलकित कर देती है। फाल्गुन की मस्ती में पक्षियों से पूरा आकाश पंखमग्न हो जाता है। फाल्गुन की मादकता से पक्षी ही क्या, मानव मन भी चहक उठता है। प्रकृति के कंठ में, मानो, मन्द-मन्द-सुगंधित पुष्प माला सी होती है। यह सारा वातावरण सरसता से पूर्ण होता है कि कवि की दृष्टि इससे हटाए नहीं हटती है। वह हर समय फाल्गुन की शोभा को ही निहारता रहना चाहता है। उसकी दृष्टि वसंत शोभा पर ही मुग्ध हो जाती है। वसंत के आगमन का यह मनोरम दृश्य मन को प्रसन्न करने वाला होता है।

3

BSER 175/2023

परीक्षार्थी उत्तर

प्र०16→ ~ तुलसीदास जी

⇒ तुलसीदास जी का जन्म सन 1532 में उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले में राजापुर गाँव में हुआ था। दूसरी मान्यता के अनुसार उनका जन्म सोरों (जिला-एटा) में हुआ था। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही तुलसी का माता-पिता से बिछोह हो गया। तुलसी का जीवन बहुत संघर्षपूर्ण था। कहा जाता है कि तुलसी को गुरुकृपा से रामभक्ति का मार्ग मिला। वे मानव-मूल्यों के उपासक कवि थे।

रामभक्ति परंपरा में तुलसी अतुलनीय हैं। रामचरितमानस उनकी भक्ति व सृजनात्मक कौशल का मनोरम उदाहरण है। उनके राम मानव-मूल्यों व आदर्शों के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से उन्होंने शील, स्नेह, त्याग, विनय आदि उदात्त आदर्शों को प्रतिष्ठित किया। रामचरितमानस उत्तर भारत की जनता में बहुत लोकप्रिय है। रामचरितमानस के अलावा उन्होंने दोहावली, गीतावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका, कवितावली की रचना की। तुलसी का अवधी और ब्रज, दोनों भाषाओं पर समान अधिकार है। उनका निधन सन 1623 में काशी में हुआ।

तुलसी ने रामचरितमानस की रचना अवधी में की और कवितावली व विनयपत्रिका की रचना ब्रज भाषा में की। उस समय के प्रचलित सभी काव्य रूपों को तुलसी की रचनाओं में देखा जा सकता है। उन्होंने रामचरितमानस की रचना चौपाई छंद में की तथा बीच-बीच में दोहे, सोरठे, हरिगीतिका आदि छंद

(4)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

पिरोए गए हैं। विनयपत्रिका की रचना गेय पदों में की गई है तथा कवितावली में सवैये तथा कवित्त छंद की छटा देखी जा सकती है। तुलसी की रचनाओं में प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप है।

प्र०17 → एक दिन मैंने ---- क्यों लिखी?

उत्तर अज्ञेय ने जापान में हुआ हिरोशिमा अणु बम विस्फोट के बारे में तथा उसके परवर्ती प्रभावों में बारे में जब पढ़ा तब उन्हें पीड़ा का अनुभव हुआ परंतु वह उनकी आंतरिक विवशता को बाहर निकालकर लेखन करने के लिए काफी नहीं थी। जापान की यात्रा में उन्होंने प्रत्यक्ष हिरोशिमा अणु बम विस्फोट से पीड़ित लोगों और उसके दुष्प्रभावों को देखा। परंतु ~~सत्य~~ प्रत्यक्ष अनुभव से अनुभूति गहरी चीज होती है। अनुभव तो घटित का होता है परंतु अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे सत्य को आत्मसात कर लेती है, अप्रत्यक्ष घटना भी ज्वलंत प्रकाश में आँखों के समक्ष आ जाती है। जब लेखक जापान में अकेला सड़क पर घूम रहा था तब उसे एक झुलसे हुए पत्थर पर मनुष्य की उजली छाया दिखी। उसने अनुमान लगाया कि कोई मनुष्य वहाँ पत्थर के समक्ष खड़ा होगा और अणु बम विस्फोट के रेडियोधर्मी पदार्थों की किरणें उसमें रुद्ध हो गयी होगी जिन्होंने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया और जो किरणें

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उसके आस-पास से गुज़री उन्होंने पत्थर को झुलसा दिया होगा और उस मनुष्य की छाया उस पत्थर पर छोड़ दी। यह देखकर लेखक को ऐसा लगा कि वह हिरोशिमा के अणु-बम विस्फोट का भोक्ता बन गया। इसी प्रत्यक्ष अनुभूति से वह कविता लिखने के लिए आंतरिक रूप से विवश हो गया है। उसने हिरोशिमा में कुछ न लिखकर, भारत लौटने समय रेलगाड़ी में बैठकर लिखी। यह कविता अनुभूति प्रसूत थी जो कि प्रत्यक्ष-अनुभूति की आंतरिक विवशता से जन्मी थी।

प्र० 20 महिला उद्यमिता विज्ञापन लिखिए।

आइए! | आइए! | आइए!

*महिला उद्यमिता केन्द्र

महिला उद्यमिता केन्द्र से अचार व पापड़ की बिक्री करके आत्म-निर्भरता का प्रोत्साहन करें!

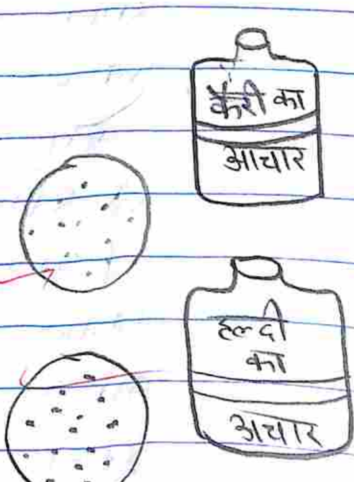

*हल्दी, कैरी, मिक्स अचार
*मूँग, मक्के, चावल के पापड़
~होम डिलीवरी~

भवर मंडी, केकड़ी रोड, बाड़ी। दूरभाष - 98xxxxxxxx

4

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र॰19.→ स्वयं को रामगढ ------ पत्र लिखिए।

→ रामगढ़।
दिनांक :- 12-03-2024
प्रिय मित्र राकेश,
सप्रेम नमस्ते!
मैं यहाँ पर कुशल मंगल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी सकुशल हो। मैंने इन दिनों सुना है कि तुम अपनी पढ़ाई तन्मयता से नहीं कर पा रहे हो और तुम्हारे अंक कक्षा में गिरते जा रहे हैं। तुम निराश मत होना। तुम चाहो तो यह सब ठीक कर सकते हो। तुम्हें अनुशासित रहने की अत्यधिक आवश्यकता है। अनुशासन से तुम कक्षा में, पढ़ाई में तो अच्छे स्तर पर रहोगे ही, साथ ही स्वास्थ्य में भी यह लाभकारी होगा। हम विद्यार्थियों के लिए अनुशासन सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसके बिना तुम्हारी जीवन शैली गड़बड़ा जाएगी। तुम आत्म-अनुशासन व लगन के साथ सब कुछ प्राप्त कर सकते हो। सुबह जल्दी उठना, संतुलित आहार लेना, कक्षा कार्य व दोहरान रोजाना करना, खुद को स्वच्छ व स्वस्थ रखना, खेल व पढ़ाई में संतुलन रखना आदि सब अनुशासन के ही पहलु है। सफलता की सीढ़ी चढ़ने का पहला कदम अनुशासन ही होता है। अनुशासन से ही निर्धारित होगा कि तुम आगे जाकर सफल होते हो या नहीं। आशा करता हूँ तुम अनुशासन को आचरण में लाओगे।
तुम्हारा मित्र,
अर्जुन।

4

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र०18. → ~निबंध लेखन

(2) शिक्षा के क्षेत्र में मोबाइल की उपयोगिता

(i) प्रस्तावना :- मोबाइल हमारे जीवन का अविभाज्य हिस्सा बन गया है। अब हमें हर क्षेत्र में मोबाइल की आवश्यकता होती है। चाहे वो वस्तु-विनिमय हो, विद्यालय हो, चिकित्सालय हो, या संचार हो। आजकल बहुत सारा कार्य 'डिजिटल' हो गया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी मोबाइल का प्रभाव देखा जा सकता है। कोरोना काल में तो पूरी शिक्षा अर्जन की प्रक्रिया मोबाइल पर ही आधारित हो गई थी। अगर विद्यार्थियों को कोई भी शंका रह जाती है तो वे मोबाइल की मदद से अपनी शंका को दूर कर लेते हैं। उन्हें मोबाइल पर सारा ज्ञान भंडार मिल जाता है। वे अधिक से अधिक खोज, विद्या के लिए, मोबाइल पर कर सकते हैं।

"मोबाइल बना,
विद्या का आधार।
विज्ञान के रस,
उपहार को नमस्कार।।"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) मोबाइल का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग :-

⇒ मोबाइल को शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रकार से उपयोग में लिया जा सकता है —

* मोबाइल से विद्यार्थी अपनी शंका दूर कर सकता है।

* मोबाइल से विद्यार्थी अपना छूटा हुआ अध्याय समझ सकता है।

* मोबाइल से विद्यार्थी ऑनलाइन क्लास ले सकता है।

* मोबाइल से विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा पूरी कर सकता है।

* मोबाइल से विद्यार्थी आगे की बड़ी परिक्षाओं जैसे ~~नी~~ एन.ई.ई.टी अथवा जे.ई.ई. की तैयारी घर बैठे-बैठे कर सकता है।

* मोबाइल में ही अपनी पाठ्य सामग्री को सुरक्षित रख सकता है।

* मोबाइल से ही हम अन्य मित्रों से वार्तालाप करके पढ़ाई के बारे में चर्चा कर सकते हैं।

* मोबाइल पर ही शिक्षकों द्वारा पाठ्य सामग्री भेजी जा सकती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"मोबाइल देता है,
ज्ञान का उपहार।
इसका दुरुपयोग करना,
है हमारी ही हार।।"

(iii) मोबाइल प्रयोग के दुष्परिणाम:-

⇒ मोबाइल प्रयोग के निम्नलिखित दुष्परिणाम हो सकते हैं:-

* बच्चों को मोबाइल की लत लग जाती है। बच्चे पढ़ाई के बजाए गलत संगति में पड़ जाते हैं। बच्चे सोशियल मीडिया से दुष्प्रभावित हो जाते हैं। बच्चे गलत चीजों को देखकर माता-पिता का भी अपमान करते हैं। बच्चे असम्भल होकर बाद में पश्चाताप करते हैं।

(iv) छात्रों पर मोबाइल का प्रभाव :-

छात्रों पर ही आधारित है कि वे मोबाइल का दुरुपयोग करते हैं या सदुपयोग। उनकी जिंदगी सवारनी या बिगाड़ना उनके हाथों में है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"मोबाइल से शिक्षा लो
जिंदगी सवर जाएगी।
उसके जाल में पड़ो, यदि
जिंदगी बिगड़ जाएगी।।"

6

(V) उपसंहार:-

हमें अपनी शिक्षा के लिए ही मोबाइल का उपयोग करना चाहिए। गलत चीजो से खुद को दूर रखना चाहिए। हर चीज के दो पहलु होते हैं, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम उसका कैसे

80/80 Suman 20.3.24

BSER 175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-175/2023